सहजयोग आज का महायोग

सहजयोगी सदैव चैतन्य द्वारा आकस्मिक आपदाओं से सुरक्षित रहता है

बंधन यानि हमारा सदैव ईश्वर के बंधन में रहना या चैतन्यमयी कवच को धारण कर स्वयं को सुरक्षित करना। हमने ध्यान करना शुरू किया,चैतन्य को ग्रहण करना भी शुरू किया। पर, जरूरत है इस चैतन्य को जो हमारे अंतर के सभी चक्रों को प्रकाशित करता है, हमें सर्वगुण संपन्न बनाता है, उसी चैतन्य से अपने चारों ओर ऑरा का कवच बनाना और चक्रों को सुरक्षित करना। श्री माताजी ने अपने साधकों के लिये सभी उपाय किये हैं एवं हमें उन उपायों से अवगत भी कराया है।

जैसे ही हम ध्यान करना शुरू करते हैं हमारे चक्र स्वच्छ होना शुरू हो जाते हैं। जितनी तेजी से हमारे चक्र शुद्ध होते हैं व हम सकारात्मक होने लगते हैं परंतु उतनी ही तेजी से नकारात्मकता के प्रभाव में आकर उनके अशुद्ध होने की संभावना भी बनी रहती है। इसीलिये श्री माताजी ने हमें सदैव बंधन में रहने का उपदेश दिया है। श्री माताजी कहती हैं कि जैसे सफेद वस्त्र में कोई दाग लगे तो वह उठकर दिखाई देता है लेकिन बदरंग या रंगीन कपड़ों में वो दाग दिखाई नहीं देता। वैसे ही चक्र शुद्धि वाले सहजी को भी कोई भी नकारात्मकता जल्दी ही लग सकती है। किसी भी बुरी बात का या बुरे व्यवहार का असर हमपर बहुत जल्दी हो सकता है। इसीलिये, हमारे लिए यह अनिवार्य है कि हम सदैव बंधन में रहें।

यह बंधन क्या है, कैसे है? यह भी एक विचारणीय प्रश्न है. हमने देखा है कि किसी भी भगवान या किसी संत पुरूष के चारों ओर एक प्रकाश की परिधि दिखाई देती है, इसे ऑरा कहते हैं। कुंडलिनी शक्ति के जागृत होने एवं सभी चक्रों के प्रकाशित होने पर सहज योगियों के चारों तरफ भी एक अदृश्य ऑरा बनाता है जो हमें दिखाई तो नहीं देता है पर वो होता है। यह ऑरा बंधन लेने पर हमारे चारों ओर निर्मित होता है। हमें अपने को इस ऑरा के बीच सुरक्षित रखना है, अपने आपमें अपनी शक्तियों को सहेजकर रखना है। अभी अभी हमने चैतन्य पाना शुरू किया है तो हमें इसका संरक्षण भी करना होगा। जैसे जैसे हम ध्यान में गहन होते जाते हैं हमारे चारों ओर का प्रकाश भी गहन होता जाता है।

बंधन सिर्फ चक्र को नहीं बल्कि पूरे शरीर को सुरक्षित रखता है, कई प्रकार के संकटों से हमें बचा लेता है। सहज योग में सहजयोगियों के कई ऐसे अनुभव हैं जिसमें उन्होंने बताया है आने वाला संकट सिर्फ अपना आभास देकर टल गया। घर से बाहर निकलने के पहले सभी सहज योगियों को बंधन लेना ही चाहिये। ऐसा करने से हम कई आकस्मिक अपघात से बचे रहते हैं। साथ ही हमें रात को सोने से पहले और सुबह उठते से ही बंधन लेना चाहिये।

तीन बार कुंडलिनी उठा,लिया है बंधन सात
सुरक्षित तन और मन हुआ, माँ अद्भुत तेरी सौगात

अपने नजदीकी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 या वेबसाइट 222.sahajayoga.org.in से प्राप्त कर सकते हैं।

वसुधैव कुटुंबकम

इस माह की 15 तारीख को विश्व परिवार दिवस मनाया जा रहा है, आप सभी को विश्व परिवार दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं, किंतु यह चलन अभी-अभी हुआ है, की विभिन्न विषयों पर किसी विशेष दिन को हम किसी दिवस के नाम से संबोधित करने लगे हैं। एक वाक्य है ÷वसुधैव कुटुंबकम÷ यानी संपूर्ण विश्व यह भूमंडलपर रहने वाले समस्त प्राणी जो भी है, सभी एक परिवार है। हमारी प्राचीन संस्कृति में तो पहले से ही संपूर्ण विश्व को एक परिवार ही माना गया है। यह संपूर्ण विश्व आपस में जुड़ा हुआ है, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, वायु यह पांच तत्व संपूर्ण विश्व में व्याप्त हैं, मनुष्य ही नहीं, वरन् पृथ्वी पर रहने वाले अन्य वन्य जीव, जल में रहने वाले जलचर, आकाश में विचरण करने वाले प्राणी, छोटे से छोटे जीव जंतु यह सभी कहीं न कहीं आपस में एक सामंजस्य द्वारा जुड़े हुए हैं। हमारी संस्कृति में यह मूल भाव शुरू से ही विद्यमान रहा है और इसीलिए यह अभी तक नष्ट भी नहीं हुई, इसमें में वह सब विद्यमान है जो बाहर से हमें मिलता है, पर बड़े ही आश्चर्य का विषय है, विदेशी लोग हमारी संस्कृति की ओर आकर्षित हो रहे हैं और हम भारतीय ही अपनी संस्कृति की मूल अवधारणा को भूलते जा रहे हैं। ÷सर्वे भवंतु सुखिन, सर्वे संतु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यंतु, मां कश्चित दुख भाग भवेत÷ इसमें यह कामना की गई है, सब सुखी हो, सब निरोगी हो, सब भद्र हो, यानी सब की एक दूसरे के प्रति मंगल भाव की कामना हो व वैसा ही आचरण हो, कोई भी संसार में दुखी ना हो, हमारी संस्कृति सदैव सामंजस्य वह सहचार्य की रही है, हमें इस पर पूर्ण गर्व होना चाहिये। विशेष- विनम्र निवेदन उन महानुभावों से, जिन्होंने हमारी प्राचीन संस्कृति का अध्ययन ही नहीं किया व बगैर सही अध्ययन के, वे इसके विरोध में खड़े हो जाते हैं, अगर आप हमारी मूल संस्कृति का सही अध्ययन करें तो पाएंगे यह विश्व के सर्वांगीण विकास की और ही संकेत करती है, पर बात इसे पूर्ण ईमानदारी से अपनाने की है।

मानसून की खुशी

इस साल मानसून को लेकर दो अच्छी खबरें हैं एक तो 5 प्रतिशत ज्यादा हो सकती है बारिश अर्थात 105प्रतिशत तक हो सकती है दूसरा मानसून इस साल 27 मई को ही केरल पहुंच जाएगा हमारे यहां मानसून किसी भी महोत्सव से कम नहीं है दक्षिण-पश्चिम मानसून हर साल जून से से लेकर सितंबर तक रहता है । वैसे भी अच्छी बरसात का होना हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि कृषि का हमारे देश में योगदान खासा है जो कि मानसून पर निर्भर है ।अगर ये मौसम की भविष्यवाणी सही निकलती है तो हम? सभी इसके लिए दुआ करेंगे व जून का बेसब्री से इंतजार करेंगे। साथ ही वर्षा जल संचय के बारे में सोचना होगा।

।साजिद अली चंदन नगर इंदौर

पुस्तक समीक्षा

सुकेश का मास्टर स्ट्रोक

हिंदी के शीर्ष लघुकथाकार सुकेश साहनी जी, संपादन कला एवं लेखन कला में वैश्विक स्तर पर पहचान बना चुके हैं, उनके संपादन में 2020 में प्रकाशित लघुकथा का साझा संग्रह ÷मास्टर स्ट्रोक÷ की लघुकथाओं से मैं गुजर रहा हूं, जिसकी लघुकथाएं रिश्ते नातों व सामाजिक बंधनों विभेदों की गहनता से पड़ताल करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

बलराम अग्रवाल की लघुकथा बिना नाल का घोड़ा ऐसी लघुकथा है, जो यह दर्शाती है कि आज के भौतिकतावादी युग में इंसान बिल्कुल घोड़ा सरीखा बन चुका है, जो सब कुछ सहता है, बहुत कुछ सुनता है, सिर्फ इसलिए कि घर-परिवार और ऑफिस के बंधनों को निभाना उसकी नैसर्गिक विवशता है। प्रियंका गुप्ता की लघुकथा भेड़िये घर में छिपे षड्यंत्रकारियों की ओर संकेत करती है। यह लघुकथा मानवेतर कथानक के माध्यम से अपना संदेश देने कुछ हद सफल रही है, मुझे लगता है कि कई बार बहुत गूढ़ प्रतीकों के माध्यम से संदेश प्रेषित करने वाली लघुकथाएं, आम पाठकों के सिर के ऊपर से गुजर जाती हैं, वह किसी फैंटेसी कविता सी प्रतीक होती हैं।

धार्मिक उन्माद किसी भी देश और समाज के लिए विनाशकारी होता है, मार्मिक लघुकथा रंग-बेरंग में बृजेश कानूनगो ने कपड़ों के प्रतीकों के माध्यम से यह संदेश दिया है कि जो समाज सांप्रदायिक झगड़ों में उलझा रहता है,

वह कभी तरक्की नहीं कर सकता। किसी भी देश व समाज के लिये सांप्रदायिकता की आग अत्यंत विनाशकारी होती है।

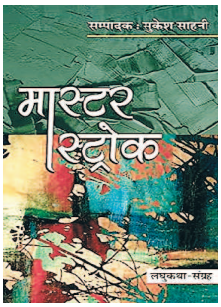

रूप देवगुण की लघुकथा दूसरा सच में लघुकथाकार ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि थोड़ी सी मदद करने वाले हाथ कभी-कभी घर के पीछे के रास्ते से आकर घर की इज्जत पर हाथ डालने की फितरत में लगे रहते हैं। संध्या तिवारी की लघुकथा राजा नंगा है में यह दिखाया गया है कि पुरुष प्रधान समाज में आज भी स्त्रियां दोयम दर्जे पर हैं, वह अपने रिश्तों को बचाने के लिए, झूठी मर्यादाओं की चादर ओढ़े रहती हैं, सिर्फ इसलिए कि रिश्तों की महीन डोर दरकने न पाये, टूटने न पाये।

सुकेश साहनी की लघुकथा चिड़िया नैराश्य जीवन की अंधेरी निशा में आशाओं का दीपदान करती उत्कृष्ट रचना है।

मधुदीप की लघुकथा %बंद दरवाजा यह दर्शाती कि पाप करने वाले धर्म का सहारा लेकर हमारे सामने हमेशा पाक-साफ बने रहते हैं।

महेश दर्पण की लघुकथा इस्तेमाल में स्त्रियों के फ्लर्टपन को दिखाया गया है।

योगराज प्रभाकर की लघुकथा जमूरे में लेखक ने फिल्मी व्यवसायिक लेखन की उस सडांध का बारीकी से रेखांकन किया है, जो समाज और साहित्य के लिये घोर चिंतन-मंथन का विषय है।संपादक सुकेश जी में वह अनूठी प्रतिभा है जो कंकर और हीरे की पारखी पहचान रखती है।

चित्रा मुद्गल, छवि निगम, मार्टिन जॉन, चंद्रेश कुमार छतलानी,पवन शर्मा, कमल चोपड़ा, अशोक भाटिया, विष्णु नागर, भगीरथ, मुकेश वर्मा, सतीश राठी, हरि मृदुल, रामकरन, रामकुमार घोटड़ सहित कुल 112 लघुकथाकारों की लघुकथाओं को संग्रह में शामिल किया गया है। संग्रह की लघुकथाएं सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजते हुए दिखाई पड़ती हैं। चयन भी इस तरह से ने किया है कि कहीं भी पाठक को ऊब या उलझन महसूस नहीं होगी।

पुस्तक -मास्टर स्ट्रोक
(साझा लघुकथा संग्रह)
संपादक- सुकेश साहनी
प्रकाशन- अयन प्रकाशन
नई दिल्लीसमीक्षक-सुरेश सौरभपता- निर्मल नगर लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश
पिन-262701मो-7860600355

सूर्य असीम ऊर्जा का केंद्र

हम सभी जानते हैं कि सूर्य सारे ब्रह्मांड की उर्जा का स्रोत है। सृष्टि के कण-कण को शक्ति सूर्य से ही मिलती है। प्रकृति हो या मनुष्य या चर-अचर जगत की कोई भी वस्तु, सभी सूर्य की किरणों के स्पर्श मात्र से नया जीवन पाते हैं। शास्त्रों के अनुसार सृष्टि की प्रत्येक रचना पांच मुख्य तत्वों पृथ्वी, आकाश, जल, अग्नि और वायु से मिलकर हुई है। ये पांचों प्रकृति के आधार तत्व हैं और इन सभी का केंद्र है सूर्य। ब्रह्मांड निर्माण के इन पांचों तत्वों को ऊर्जा सूर्य से मिलती है।

ऋग्वेद में है सूर्य अर्घ्य का महत्व-

भारतीय दर्शन के मूल आधार चारों वेदों में से पहले और प्रमुख ऋग्वेद में इसका समुचित और विस्तृत विवरण मिलता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य प्रकृति के प्रत्येक कण को जागृत करता है। सूर्य के कारण ही सृष्टि का प्रत्येक कण काम करता है और सक्रिय रहता है। सृष्टि के समस्त जीवित तत्व अपनी ऊर्जा के लिए सूर्य पर ही निर्भर करते हैं। सूर्य जीव मात्र की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक दुर्बलताओं को समाप्त कर प्रत्येक प्राणी को स्वस्थ और दीर्घायु बनाता है। सूर्य की किरणों में समाहित सात रंग मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बेहद महत्वपूर्ण और असरकारी हैं। यदि कोई व्यक्ति सुबह स्नान करने के बाद एक कलश जल सूर्य को अर्पित करता है, तो उस जल की धार से छनकर आती सूर्य की किरणें पूरे शरीर पर पड़कर सारे रोगों को दूर करती हैं और व्यक्ति को बुद्धिमान बनाती हैं।

वैज्ञानिकों ने भी माना अर्घ्य का महत्व-

धर्म से इतर वैज्ञानिक प्रमाणों पर विश्वास करने वाली आधुनिक पीढ़ी के लिए सूर्य को अर्घ्य देने के पक्ष में पर्याप्त वैज्ञानिक आधार हैं। कई वैज्ञानिकों ने अनुसंधान और शोध के बाद प्रमाणित किया है कि वेदों में बताया गया हर कार्य विज्ञान सम्मत है। सूर्य को अर्घ्य देने की रीति के बारे में विस्तृत प्रमाण देते हुए विज्ञान ने भी साबित किया है कि जब हम सूर्योदय के समय दोनों हाथों को ऊपर उठाकर सूर्य को जल चढ़ाते हैं, तब तीखे किनारी वाले कलश से पानी की पतली सी धार गिरती है। इस धार से सूर्य और जल चढ़ा रहे व्यक्ति के बीच पानी की एक पतली दीवार बन जाती है। यूं तो सूर्य के प्रचंड प्रकाश की तरफ खाली आंखों से देख पाना संभव नहीं है, पर पानी की धुंधली दीवार से छनकर जब सूर्य की किरणें हमारी आंखों पर पड़ती हैं, तो वह नेत्र ज्योति को परिष्कृत करती हैं। इससे आंखों की ना सिर्फ रोशनी बढ़ती है, बल्कि कई तरह के रोगों से बचाव भी होता है। पानी की धार से छनकर आती सूर्य की किरणें पूरे शरीर पर सकारात्मक उर्जा का छिड़काव करती हैं। इससे व्यक्ति के आंतरिक और आत्मिक बल में वृद्धि होती है।

ज्योतिषीय महत्व

सूर्य को अर्घ्य देने का महत्व केवल वेदों और विज्ञान में ही नहीं बताया गया है, बल्कि ज्योतिष ग्रंथों में भी सूर्य को अर्घ्य देने के अनेक लाभ बताए गए हैं। सूर्य सभी ग्रहों का राजा है

अतः कुंडली में सूर्य जितना बली होगा उतना ही जातक को लाभ होगा, सूर्य को जल अर्पित करने से सूर्य बली होता है। यदि जन्मांगचक्र में सूर्य की कमजोर स्थिति हो और सूर्य को बली बनाना हो

तो सूर्य को प्रतिदिन लाल पुष्प डालकर अर्घ्य दिया जाता है। नौकरी या बिजनेस में लाभ नहीं मिल रहा हो या अटका हुआ पैसा निकालना हो तो सूर्य को जल चढ़ाना लाभकारी होता है।जल में तिल मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देने से पितृ दोष से मुक्ति मिलती है। लाल पुष्प कुमकुम मिलाकर सूर्य को अर्घ्य देने से सूर्य बली होकर यश प्रदान करता है।

धर्म हो या विज्ञान-

बहरहाल, धर्म हो या विज्ञान, दोनों का उद्देश्य मानव मात्र की भलाई और उसकी क्षमताओं में वृद्धि करना है। दोनों ही अपने स्वभाव और मान्यताओं के अनुसार मनुष्य के विकास में सहायक होते हैं। यही वजह है कि कभी धर्म विज्ञान का, तो कभी विज्ञान धर्म का परीक्षण करता रहता है। इसी क्रम में सूर्य को अर्घ्य देने जैसी रीतियां प्रमाणित होती हैं, जो मनुष्य के लिए कल्याणकारी होती हैं। वैसे भी सूर्य को जल चढ़ाना ना तो अधिक समय और ना ही अतिप्रयास मांगता है।

एक छोटे से प्रयास को आदत बनाकर हम अपना संपूर्ण कल्याण बड़ी ही आसानी से कर सकते हैं। और वैसे भी सूर्य को अर्घ्य देने से प्रकृति के प्रति समर्पण भाव को बल मिलता है। अतः प्रातः काल स्नान के बाद सूर्य को अर्घ्य देने की आदत डालें।।

पं.रामगोपाल शर्मा
गुरुजी निदेशक
प्रज्ञाश्रय शोध संस्थान

शहरी रोजगार व्यवस्था की जरूरतें

भारत एक विशाल देश में प्रतिदिन लोग मजदूरी के लिए कार्य पर निकलते हैं। प्रतिदिन कार्य को ढूंढना और उससे जीवन यापन करने का अभिन्न अंग बनाते हुए निरंतर कार्य करते रहना, यही जीवन का लक्ष्य बन जाता है। इंदौर में भी लोग परिवार सहित कार्य पर मजदूरी प्राप्त करने के उद्देश्य से कार्य से जुड़े रहते हैं। पूरी ईमानदारी के साथ समय पर कार्य कर मेहनताना प्राप्त कर पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण करते हैं।

1 मई 1886 को संयुक्त राज्य अमेरिका में मजदूरों ने 15 - 15 घंटे काम करने से असमर्थता दिखाते हुए 8 घंटे कार्य दिवस की मांग करते हुए हड़ताल की गई थी। श्रमिक कार्यकर्ता पीटर मेकगायर और मैथ्यू मेगुयर दोनों को श्रम दिवस का जनक÷ कहा जाता, जिन्होंने 19वीं सदी में अमेरिकी श्रम अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी। श्रमिकों के अधिकारों, सामाजिक न्याय और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों के लिए संघर्ष करने वालों की याद में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस की शुरुआत हुई। भारत में मजदूर दिवस की शुरुआत 1923 में हुई थी।

भारत में लेबर एक्ट, 1948, जिसे न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948 के नाम से जाना जाता है। भारत का एक प्रमुख श्रम कानून है। यह अधिनियम कुशल एवं अकुशल श्रमिकों को दी जाने वाली न्यूनतम मजदूरी की दर तय करता है। भारत में भारतीय मजदूर संघ कार्यशील है तथा उसका नारा है - मजदूरों दुनिया को एक करो। अन्य मजदूर संगठन का नारा है - ÷ चाहे जो मजदूरी हो, मांग हमारी पूरी करो÷ मजदूर आंदोलन और श्रमिकों के अधिकारों के लिए प्रतीक चिन्ह लाल झंडा संघर्ष का प्रतीक है। भारत में मजदूर वर्ग की स्थिति जटिल और कई पहलुओं से युक्त है।

2020 में भारत में लगभग 476.67 मिलियन श्रमिक थे, बड़ी संख्या में श्रमिक असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं जहां उन्हें कम वेतन, नौकरी की असुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा की कमी का सामना करना पड़ता है। इंदौर शहर में पिछले कुछ दशकों में यहां पर 6 मिल हुआ करती थी, जहां पर बहुत अधिक संख्या मे श्रमिक कार्य करते थे, वह सभी बंद होने से श्रमिक की स्थिति बीते वर्षों में बहुत अच्छी नहीं रही। मिले बंद होने से मजदूरी कार्य प्रभावित हुआ तथा वर्तमान में अब रियल स्टेट कार्य, सड़क निर्माण, दवाई फैक्ट्री, सोयाबीन प्लांट, पीथमपुर स्थित विभिन्न उद्योगों में श्रमिकों को रोजगार उपलब्धता सुनिश्चित की है। इंदौर शहर के समीप पीथमपुर हेवी मशीनरी उद्योग से जाना जाता है ।

शहर में मजदूर चौक देखने को मिल जाया करते हैं, जहां विभिन्न प्रकार की मजदूरी कार्य के कुशल एवं प्रशिक्षित मजदूर होते हैं यह स्थान शीतला माता बाजार, सेफी होटल, मालवा मिल, बजरंग नगर, आदि स्थानों पर कामगार कार्य के लिए उपलब्ध होते हैं। श्रमिक कल्याण के लिए विभिन्न संस्थाओं द्वारा योजना अंतर्गत लाभ मिलता है। शहर के विकास में श्रमिकों का बहुत योगदान रहता है, स्वस्थ नागरिक होने के साथ कामगार हितों को ध्यान रखकर कार्य की उपलब्धता सुनिश्चित करते रहेंगे।

- पवन सोलंकी, इंदौर

PW की प्रज्ञा जैस्वाल ने MP बोर्ड कक्षा 10 में टॉप किया

248 छात्र 95% से अधिक अंक प्राप्त करने में सफल एजुकेशन कंपनी फिजिक्सवाला के MP Board Wallah ने कक्षा 10वीं के मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा मंडल (MPBSE) के परिणामों में शानदार प्रदर्शन करने वाले अपने छात्रों की सफलता का जश्न मनाया।

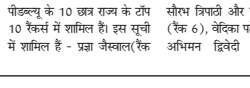

पीडब्ल्यू के 10 छात्र राज्य के टॉप 10 रैंकर्स में शामिल हैं। इस सूची में शामिल हैं - प्रज्ञा जैस्वाल(रैंक 1), आयुष द्विवेदी (रैंक 2), अनुराग कुमार साहू (रैंक 5), सौरभ त्रिपाठी और वैष्णवी शुक्ला (रैंक 6), वेदिका पटेल (रैंक 7), अभिमन द्विवेदी और आयुष प्रजापति (रैंक 8), शुभम तिवारी (रैंक 9), और वेदिका चौरसिया (रैंक 10)। ये सभी छात्र पीडब्ल्यू के उड़ान और रूद्र MP बोर्ड वाला बैचों का हिस्सा थे, जो रूकबोर्ड के छात्रों को संरचित पढ़ाई और नियमित मूल्यांकन के माध्यम से मदद करते हैं।

जहर भरा हर मन में

उस समय गांव का सबसे बड़ा घर रामलाल का हुआ करता था। हँसी-खुशी से गूंजती थी उस घर के चार दिवारी।

कई पीढ़ियाँ एक साथ रहती थीं – दादी,राधा, उनके बेटे-बहू, पोते और उनकी नई बहूएँ।

?आंगन में तुलसी का पौधा था,जिस पर दादी रोज आरती करती, भजन गाती और दीपक जलाया करती।

?समय बदला। पहले पोते पढ़ाई के लिए बाहर गए। फिर बहूएँ अलग खाना बनाने लगीं।

धीरे-धीरे घर के कोने-कोने में चुप्पी का जहर फैलने लगा।

एक दिन, बड़े बेटे ने कहा –

मां, अब ये पुराना घर हमारे किसी काम का नहीं। हम शहर में नया फ्लैट ले रहे हैं।÷

दूसरा बेटे भी चुप नहीं रह सका–

हम भी वहीं शिफ्ट कर रहे हैं। आपको भी साथ ले चलेंगे, पर जगह कम है। आप समझ ही सकती हैं।

मां बस मुस्कुरा दीं – एक फीकी मुस्कान।

उन्हें सब समझ आ रहा था।

अगले हफ्ते, दोनों बेटे-बहूएँ शहर चले गए। साथ ले गए अपनी ज़िंदगी, अपनी सुविधा, पर छोड़ गए दादी और मां को – उस हवेली में, जहाँ अब केवल यादें थीं।

दोनों एक दूसरे का सहारा बनी हुई थी रामलाल को स्वर्ग सिधारे कुछ ही समय हुआ था।

रामलाल ने मरने से पहले अपनी पत्नी से कहा था,बच्चों का भरोसा नहीं है, तुम मेरी मां का पूरा ध्यान रखना। अपने पति को दिए वादे को निभा रही थी राधा।

दोनों ने हिम्मत नहीं हारी।

?एक दिन गाँव के स्कूल में पढ़ने वाली गुड़िया, जो अक्सर दादी को बाहर चबूतरे पर बैठा देखती थी।

कई दिनों तक, जब दादी नजर नहीं आई तो, उसने सोचा आज स्कूल की छुट्टी के बाद दादी से मिलने जाऊंगी ।

गुड़िया दादी से मिलने आई।

दादी, आप अकेली रहती हो?डर नहीं लगता

दादी ने कहा –अकेली कहां ?बहु है ना साथ में।

जब अपने ही साथ छोड़ दें, तो डर किससे लगे बेटा?÷

गुड़िया चुप हो गई। मगर वह रोज दादी से मिलने आने लगी।

कभी कभी कि ताब सुनाने, कभी दूध लाने।

वह किसी ने किसी बहाने से रोज दादी से मिलने आ जाया करती थी।

दादी को अब एक उम्मीद की किरण दिखी। दादी रोज गुड़िया का इंतजार करने लगी।

गुड़िया के लिए उन्होंने पुराने कपड़े सिलने शुरू किए, कभी चूड़ियाँ दीं, कभी कहानी सुनाई।

एक दिन जब गुड़िया दादी से मिलने आई उस समय काकी भी घर में नहीं थे।

अचानक दादी की तबीयत बिगड़ी। गुड़िया दौड़ती हुई डॉक्टर को लाई।

गाँव वालों को बुलाया, दवाई दिलाई।

और तब्ज शहर में बैठे पोतों को पता चला कि दादी अस्पताल में हैं।

वो आए, मगर सिर्फ़ एक औपचारिकता निभाने।

कहने लगे –

मां, हमें माफ कर दो। पर अब क्या करें, ज़िंदगी बहुत व्यस्त हो गई है। अब दादी की तबीयत कैसी है

मां ने कुछ नहीं कहा।

बस उनकी आँखों से आंसू बहते गए –

रिश्ते सारे टूट रहे हैं, सभी स्वार्थी हो गए

अस्पताल से लौटते वक्त दादी ने गुड़िया का हाथ पकड़ा और कहा –

÷बेटा, जब सबने मुझे छोड़ा, तब तू आई। तू और मेरी बहू मेरी असली बेटी हो।

अब तुम मेरे पास ही रहा करो, बहु को भी सहारा मिल जाएगा।

वैसे भी तुम्हारा अपना तो कोई है नहीं।

गुड़िया ने कुछ नहीं कहा।

बस दादी के पैर छू कर उनके बगल में बैठ गई।

अब हवेली फिर से आबाद थी – दादी,बहू और गुड़िया के रिश्ते से, जिसमें कोई स्वार्थ नहीं था, बस सच्चा अपनापन था।

एक दिन अचानक फिर दादी की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हुई।

दादी ने अपनी जमीन जायदाद अपनी बहू और गुड़िया के नाम कर दी।

दादी की मृत्यु के बाद गाँव वालों ने देखा – उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति बहू और गुड़िया के नाम कर रखी थी।

जब शहर वाले बेटे आए, तो वकील ने कहा –

÷आपकी दादी ने सब कुछ आपकी मां और गुड़िया को दे दिया, जिससे उन्हें अकेलेपन का एहसास ना हो।

बेटे स्तब्ध रह गए।

पर कुछ कह न सके।

उनके हिस्से में केवल यादें थींऽ और पछतावा।

वीणा वैष्णव रागिनी
राजस्थान